

हिन्दी ग़ज़लों का आशावादी दृष्टिकोण

अनिल शर्मा
गणेशपुर, रुड़की

आशावाद भारतीय चिंतन की रीढ़ रहा है। इसमें मानव स्वलक्ष्यसिद्धि की प्रक्रिया एवं उसके प्रमाण पर अटल विश्वास और निष्ठा रखते हुये कर्म में संलग्न रहते हुये जीवन को अविराम गति देता है। कठिन संघर्ष के बावजूद वह प्रतिफल के प्रति आशावान रहता है। इस स्थिति में मानव कर्म-प्रतिफल के द्वंद्वात्मक संघर्ष में आशा की बागडोर थामे, चरम सुख की अनुभूति करता हुआ जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करता है।

सत्यं, शिवं, सुंदरम् की गूँज भी आशा का ही संदेश देती है। निराशाओं का जन्म अशिव मन में होता है। जबकि शिवम् मन में पुरुषार्थ की वृद्धि करता है एवं अंधकार में भी आलोक फैलाता है। निराशा के वृक्ष पर भी संकल्पों के फूल नहीं खिलते हैं। मनुष्य के मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ और विफलताएँ आती हैं, किन्तु वे चिरस्थायी नहीं होती। पतन के उपरान्त उत्थान और अँधेरे के पश्चात् उजाले के आने का क्रम निश्चित है। पतझर के बाद मनभावन बसंत का आना तय है। वस्तुतः आशा वह संजीवनी है। जो निराशा के रोग को समूल नष्ट करती है।

दृढ़ संकल्प के उत्साह से पूरित हृदय का दीपक निराशा और अज्ञान के अंधकार को सहज ही निगल जाता है। यह विश्वास लेकर जो जीवन पथ पर अग्रसर होता है। वह स्वयं भी अपनी मंजिल की ओर बढ़ता जाता है। और अन्य पथिकों का मार्गदर्शन भी करता है। एक चिराग से न जाने कितने चिराग जल जाते हैं।

आशा उत्साह की जननी है। आशा में तेज है, बल है और जीवन है। वास्तव में आशा ही संसार की संचालक शक्ति है। आशा का प्रकाश हमारी आकांक्षा, प्रतीक्षा और आनन्द की भावना को मुखरित करता है। निष्पंद जीवन को स्पंदित और निष्प्राण को जीवित बनाता है। इसी कारण भारत के ऋषि-मुनियों ने नैराश्य रूपी अंधकार से आशा रूपी आकाश की ओर ले जाने के लिए प्रभु से प्रार्थना की है— “तमसो मा ज्योतिर्गमय”। आशावाद की विस्तृत व्याख्या करते हुये संस्कृति-पुरुष एवं युग द्रष्टा प० श्रीराम शर्मा आचार्य लिखते हैं “आशावाद मनुष्य के लिये अमृत तुल्य है। जैसे तृषित को शीतल जल से, रोगी को औषधि से, अंधकार को प्रकाश से, वनस्पति को सूर्य से लाभ होता है। उसी भाँति आशावाद की संजीवनी बूटी से मृतप्राय मनुष्य में जीवन शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। आशावाद वह दिव्य प्रकाश है, जो हमारे जीवन को उत्तरोत्तर परिपुष्ट, समृद्धशाली और प्रगतिशील बनाता है, सुख सौन्दर्य एवं अलौकिक छाटा से उसे विभूषित कर उसका पूर्ण विकास करता है। उसमें माधुर्य का संचार कर विघ्न, बाधा, दुख, क्लेशों और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने वाली गुप्त मन शक्ति जाग्रत करता है। आत्मा की शक्ति से दैदीप्यमान आशावादी व्यक्ति उम्मीद का पल्ला पकड़े प्रलोभनों को रौंदता हुआ अग्रसर होता है। वह पग-पग पर विचलित नहीं होता, उसे कोई पराजित नहीं कर सकता। संसार की कोई शक्ति उसे दबा नहीं सकती। क्योंकि सब शक्तियों का विकास करने वाली “आशा की शक्ति सदैव उसकी आत्मा को तेजोमय करती है।”

यदि कष्ट सहिष्णुता के साथ जीवन यापन किया जाए और आशावादी दृष्टिकोण रखा जाए तो जिन परिस्थितियों में सामान्य व्यक्ति स्वयं को असहाय और निरुपाय पाते हैं, उन्ही से जुझारु व्यक्ति जोश के साथ आगे बढ़कर सफलता से हाथ मिलाते हैं। वस्तुतः अदम्य साहस, अविचल धैर्य, खतरों से लड़ने वाला पुरुषार्थ, दृढ़ संकल्प के साथ-साथ आशावादी दृष्टिकोण

सफलता तक पहुँचाने के मजबूत सोपान कहे जा सकते हैं। अतः कहा जा सकता है कि निराशा मृत्यु का द्योतक है। जबकि आशा से मनुष्य में जीवन शक्ति का संचार होता है।

प्रश्न उठता है कि क्या रचनाकार का रचना धर्म केवल इतना ही है कि वह अपनी रचना के माध्यम से युगीन निराशापूर्ण परिवेश की और इंगित करें ? क्या इससे आगे बढ़कर उसे आशावादी दृष्टिकोण के माध्यम से समस्याओं से जूझने के लिए व्यक्ति को प्रेरित नहीं करना चाहिए ? साठोंतरी हिन्दी गज़ल में आशावाद का शंखनाद करने वाले प्रख्यात हिन्दी गज़लकार डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल इस सन्दर्भ में लिखते हैं "यदि रचनाकार ऐसा अनुभव करता है कि उसके रचनात्मक दायित्व में समाज को सकारात्मक दिशा देने की भावना भी सम्मिलित है, तो निस्संदेह उसकी दृष्टि ऐसे दृश्यों एवं अनुभवों पर भी अवश्य पड़ेगी, जो पाठक की सोच को जीवन की बेहतर संभावनाओं की तरफ ले जाने वाली हों। यहाँ प्रश्न किसी रचनाकार पर विचारधारा को थोपने का नहीं है, जीवन के विशालतम क्षितिज पर अंधकार और प्रकाश का समान रूप से अध्ययन करने और उसे अभिव्यक्ति देने का है।"

हिन्दी गज़ल में यद्यपि आम आदमी की सामाजिक समस्याएँ, धर्मों से जुड़े आडंबर निर्धन वर्ग की पीड़ा, राजनीतिक पाखंड और सत्ताधारियों की अविश्वसनीयता जैसे विषय मुख्य रूप में सम्मिलित रहे हैं, फिर भी आशावाद को भी हिन्दी-गज़लों में अनेक स्थानों पर अभिव्यक्ति मिली है।

जीवन में चाहे जितने संकट आ जाएँ परन्तु मनुष्य को न तो निराश होना चाहिए और न ही कभी हार स्वीकार करनी चाहिए मनुष्य यदि हँसता-हँसाता रहे तो सारे मानसिक तनाव समाप्त हो जाते हैं। जरा-सी रोशनी के आगे घने-से-घना अँधेरा भी भाग खड़ा होता है हिन्दी गज़लकार माहेश्वर तिवारी की गज़ल के इन शेरों में आशावादी दृष्टिकोण के दर्शन होते हैं-

यह तनावों की जमी चट्टान खिसकेगी ज़रूर,
आप थोड़ी देर को खिलखिलाकर देखिए।

काँप जाएगा अँधेरा एक हरकत पर अभी,
आप माचिस की कोई तीली जलाकर देखिए।।

घनघोर अँधेरे में भी एक छोटी-सी माचिस की तीली रास्ता दिखाने में सक्षम है। इसी प्रकार घोर नैराश्य में डूब चुके व्यक्ति के मन में 'आशा' की ऐसी चिंगारी ही बहुत है, जो व्यक्ति में उत्साह का संचार करके उसके सम्पूर्ण जीवन का रुख बदल सकती है। संकल्प शक्ति के बल पर पुरानी नाव भी लहरों से टकरा सकती है। महान हिन्दी-गज़लकार दुष्यंत कुमार की गज़ल के ये शेर मजबूत इरादे वाले व्यक्ति को अँधेरी रात के बाद स्वर्णिम प्रभात का भरोसा दिलाते हैं-

इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।

एक चिनगारी कहीं से ढूँढ लाओ दोस्तों,
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

एक चादर साँझ ने सारे नगर पर डाल दी,
यह अँधेरे की सड़क उस भोर तक जाती तो है।

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि हर रात के बाद नयी सुबह तथा अंधकार के बाद उजाला ज़रूर आता है। अनेक प्रकार के सामाजिक बंधनों में जकड़े हुए मनुष्य ने आज अपनी

विस्तृत सोच को अत्यन्त संकीर्ण बना लिया है। गज़लकार महेश अनघ परामर्श दे रहे हैं कि सामाजिक बंदिशों के बावजूद अपने घर में स्वयं सूरज बनकर उगने वाला व्यक्ति ही जीवन का मर्म जान सकेगा।

पर—कटे अस्तित्व को मरहम लगाना चाहिए,
बेखबर जो लोग हैं, उनको जगाना चाहिए।

बंदिशों ने बन्द रोशनदान—खिड़की कर दिए,
अब उचित है घर में ही सूरज उगाना चाहिए।

सूरज, चाँद, नदी आदि प्रकृति के सभी उपादान मनुष्य को निरन्तर गतिशीलता की ही प्रेरणा प्रदान करते हैं।

जीवन एक परीक्षा है, जिसमें साधनों के अभावों के बावजूद धैर्य और साहस के बल पर आदमी अपने इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। हिन्दी—गज़लकार गुलशन मदान निम्न शेर के माध्यम से साहस की मिसाल पेश कर रहे हैं—

कट गए थे पंख लेकिन हम उड़ानों में रहे,
इस तरह हम ज़िन्दगी भर इम्तिहानों में रहे।

आशावादी दृष्टिकोण वाले व्यक्ति के साहस की प्रशंसा करते हुए गज़लकार गुलशन मदान की गज़ल का एक और बेहतरीन शेर देखिए—

साहस करके जो लड़ते हैं, जीवन के अँधियारों से,
वो ही बातें करते हैं फिर आसमान के तारों से।

प्रख्यात हिन्दी गज़लकार डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल ने अपनी अधिकांश गज़लों के माध्यम से आशा की निर्मलता, संकल्प की दृढ़ता, उमंग की तरलता और ऊर्जा की अदम्य क्षमता से जीवन को सज्जित करते का संदेश दिया है। वे कहते हैं—

जो लक्ष्य है मिलेगा, भरोसा न छोड़िए,
पत्थर भी हों तो राह में चलना न छोड़िए।

उम्मीद जिसका नाम है जीवन के साथ है,
नाकामियों के बाद भी आशा न छोड़िए।

उपर्युक्त शेरों में प्रयुक्त शब्द 'भरोसा', 'उम्मीद' एवं 'आशा' व्यक्ति के रक्त-परिसंचरण में तीव्रता पैदा करते हैं। गज़लकार का मानना है कि जीवन में सफलता की आशा को त्यागकर, निराशा को गले लगाना कदापि उचित नहीं है।

'रोशनी बनकर जिओ' गज़ल-संग्रह की भूमिका में स्वयं आशावाद की अभिव्यक्ति का पक्ष लेते हुए डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल ने लिखा है— "जीवन में आशा भी है और निराशा भी, विजय भी है और पराजय भी, उमंग भी है और हताशा भी, मुस्कान भी है और अश्रु भी। अब यह दायित्व रचनाकार का है कि वह जीवन के किस पक्ष को अधिक एवं प्रमुखता के साथ प्रदर्शित करने का निर्णय लेता है। क्योंकि रचनाकार समाज से सीधे-सीधे संबंधित होता है, इसलिए आवश्यक है कि

उसकी कलम के माध्यम से वे अनुभव कला का रूप धारण करें, जो जीवन के उज्ज्वल पहलुओं को दिखाकर समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकें।”

दीपक, सूरज, धूप, उजाला, चन्द्रमा, चाँदनी और रोशनी आदि ये सभी आशा के प्रतीक हैं। अँधेरे में दीपक, सूर्य और चन्द्रमा आशा का संचार करते हैं। डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल ने अपने शेरों में इन सभी प्रतीकों को ऐसे पारदर्शी रंग में प्रयुक्त किया है, जिसमें से कई-कई रंग एक साथ फूटते हैं। उदाहरण स्वरूप डॉ० अग्रवाल के कुछ शेर यहाँ प्रस्तुत हैं—

अब क्षितिज की ओट में 'सूरज' निकलना चाहिए,
रात लंबी हो गई है अब सवेरा चाहिए।

यों ही गर बैठे रहे तो घर ही लेगा तिमिर,
रात हो कितनी घनी 'दीपक' तो जलना चाहिए।

रातों के साथ हैं, न अँधेरे के साथ हैं,
जितने भी लोग हैं वे, 'उजाले' के साथ हैं।

बस्ती में रात छाई तो 'दीपक' भी जल गया,
'सूरज' अगर बुझा है तो तारा निकल गया।

'सूरज' का तेज चाहिए हिम्मत की 'धूप' को,
हिमपात में बना था जो पर्वत पिघल गया।

इसी प्रकार आशावाद को मानव-जीवन का सबसे बड़ा सम्बल मानने वाले आशावादी गज़लकार डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल के दो अन्य शेर विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं —

जो रात गुजरने का भरोसा नहीं करते,
मूरख हैं वे सब लोग, जो आशा नहीं करते।

जोखिम से बचोगे तो सफलता न मिलेगी,
खोने का न साहस हो तो पाया नहीं करते।

आशावादी सोच, हिम्मत और साहस के बल पर मनुष्य ने अनेक विषम एवं कठिन परिस्थितियों में भी सदैव विजयश्री प्राप्त की है। डॉ० अग्रवाल अपने निम्न शेरों के माध्यम से आदमी को हिम्मत-भरी प्रेरणा देते हुए उसके जीवन में आशा का संचार करते हैं—

अपनी किशती को किनारे से लगाना सीखिए,
लड़ के तूफ़ों से नदी के पार जाना सीखिए।

काठ की बैसाखियों पर मत भरोसा कीजिए,
अपना साहस, अपनी हिम्मत आजमाना सीखिए।

भारतीय संस्कृति के 'परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्' का संदेश यही तो है कि अपने लिए तो सभी जीते हैं, सही मायने में जीवन वही है, जो दूसरों के काम आए। डॉ० अग्रवाल निम्न शेर के माध्यम से 'परोपकार' का संदेश देते हुए कहते हैं—

आज तक जीते रहे हो अपनी-अपनी जिंदगी,
दोस्तों! इक-दूसरे की जिंदगी बनकर जिओ।

ओस की बूंदों में ढलकर तुम अगर बिखरे तो क्या,
दूर तक बहती हुई शीतल नदी बनकर जिओ।

हौसले जीवन को गति देते हैं। हौसले ही अतंतः आदमी को विजय का वरण कराते हैं। सच तो यह है कि हौसलों के अभाव में तो आदमी जिंदा लाश के समान ही होता है। डॉ० योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' के निम्न शेरों में 'हौसले' और 'आशा' के अस्तित्व का सुन्दर चित्र बन पड़ा है—

सब जलेंगे दीप जब, सारा तिमिर मिट जाएगा,
भोर का संदेश घर-घर खुद समय दोहराएगा।

हौसला लेकर बढ़े तो काम सब बन जाएँगे,
कामनाएँ पूर्ण होंगी, लक्ष्य भी मिल जाएगा।

रात काली ही सही पर यह सदा रहती नहीं,
कल सभी के आँगनों में, सुख का सूरज आएगा।

परोपकार और प्रेम का जीवन में महत्त्व स्पष्ट करते हुए डॉ० अरुण बाधाओं से टकराने की सीख देते हैं—

लेकर छोटे हो जाओगे, देकर गुरुता पाओगे,
गरल पियोगे जग की खातिर, नीलकंठ बन जाओगे।

जीती दुनिया ले तलवारें, चले गए खुद दुनिया से,
प्यार से जीतोगे जब जग को, अमर तभी कहलाओगे।
रोना या घबराना कैसा, बाधाएँ तो आती हैं,
बाधाओं से टकराकर ही, जीत जगत में पाओगे।

अदम्य साहस और उत्साह के धनी आशावादी जीवन-दृष्टि वाले लोग जीवन की अनेक विषमताओं में भी सकारात्मक सोच के बल पर समाज में अपना विशिष्ट स्थान बना लेते हैं। हिंदी गज़लकार पुरुषोत्तम अब्बी अपनी गज़ल के निम्न शेरों में बेहतर जीवन जीने की सीख दे रहे हैं—

उदासियाँ समेट ले, किसी का अब तो मीत बन,
लहू से अपने गुल खिला, हवा के साथ गीत बन।

सभी यहाँ से जाएँगे, गगन को अपने छोड़कर,
मगर अभी तो चाँद बन कि चाँदनी सी रीत बन।

तपन बहुत है प्यास में, दहक रही है धूप-सी,
बुझा दे दिल की आग को, मुहब्बतों की शीत बन।

विपत्तियों में घिरकर आदमी सहज ही टूट जाता है और ऐसे ही समय में निराशा के बादल आदमी को बार-बार घेरने का प्रयास करते हैं। ऐसी स्थिति में आदमी को अपने ऊपर विश्वास होना ही चाहिए कि वह अपनी पंजिल पर पहुँचने से पहले कदापि नहीं रुकेगा। डॉ० गिरिराजशरण

अग्रवाल के निम्न शेर व्यक्ति के मन के इसी विश्वास को मजबूत करते हुए, उसे दृढ़ संकल्प के लिए प्रेरित करते हैं—

बस्ती को अँधेरों से छुड़ाना भी सरल है,
धरती से नया चाँद उगाना भी सरल है।

गर चाह में 'विश्वास' है, आशा है, लगन है,
हो लक्ष्य जो मुश्किल उसे पाना भी सरल है।

वस्तुतः असंभव को भी संभव करने की ताकत आदमी में है। ज़रूरत सिर्फ इस बात की है कि वह मंजिल पर पहुँचने से पहले किसी भी प्रकार की ढिलाई न बरतें। डॉ० अग्रवाल की ग़ज़ल के निम्न शेर थकेहाल व्यक्ति में भी स्फूर्ति उत्पन्न करते हैं।

कब तक सहेगा प्यास की विपदा, बता मुझे,
चट्टान को निचोड़ के पानी निकाल अब।

थकने लगे तो और भी रफ़्तार तेज़ कर,
मंजिल नहीं है दूर, न होना निढाल अब।

यह सत्य है कि मनुष्य के मार्ग में कठिनाइयाँ और विफलताएँ आती ही रहती हैं, लेकिन यह भी सत्य है कि ये चिरस्थायी कदापि नहीं होती। काँटों में भी फूल खिलते हैं और पतझर के बाद भी बहारें आती हैं। डॉ० अग्रवाल जीवन को हर हाल में जीने योग्य मानते हुए प्रेरणा देते हैं—

है पर्वतों के बीच, ढलानों के बीच भी,
दरिया को लेके जाइए, प्यासों के बीच भी।

सुख—चैन के अभाव से, हँसना न छोड़िए,
खिलते हैं फूल दोस्तों, काँटों के बीच भी।

बस ढूँढ़ने की बात है जीवन कहाँ नहीं,
पतझर के बीच भी है, बहारों के बीच भी।

लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में बाधाएँ तो आती ही हैं, लेकिन ऐसे में भी आशा का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में भी आदमी यदि सँभल—सँभल कर चले और मन में साहस और आशा सँजोए रखे, तो लक्ष्य—प्राप्ति के अवसर बहुत अधिक बढ़ जाते हैं। मनोज अबोध अपनी एक सुंदर ग़ज़ल के माध्यम से जीवन के संघर्षों से जूझने की सीख इस प्रकार से दे रहे हैं—

घर से दूर निकलना सीख,
अब तो पैदल चलना सीख।

फल ऊँचे हैं वृक्षों पर,
थोड़ा और उछलना सीख।

प्रण है बादल लाने का,
सूरज बनकर जलना सीख।

गिरना कोई बात नहीं है,
गिरकर किंतु सँभलना सीख।

लड़ना है यदि बूँदों से,
अंगारों में ढलना सीख।

व्यक्ति को हर स्थिति में आशावादी होना चाहिए। सुनसान जंगल में भी प्रेम का एक आशियाँ बनाने की उसके अंदर हिम्मत होनी चाहिए और ईर्ष्या, द्वेष तथा घृणा के सागर में भी उसे प्यार के मोती तलाशने के लिए तत्पर रहना चाहिए। प्रसिद्ध हिंदी – गज़लकार विनोद तिवारी के निम्न शेर निराश व्यक्ति के मन में भी आशा का संचार करते हैं—

इस बियाबान में एक घर ढूँढिए,
घर की छत के लिए एक सर ढूँढिए।

प्यार का कोई नन्हा-सा मोती भी हो,
नफ़रतों के समुंदर में गर ढूँढिए।

निर्भीक और कर्मशील व्यक्ति पथ में आने वाली बाधाओं से विचलित नहीं होते, बल्कि निरन्तर आगे बढ़ते हैं। डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल के इन शेरों में 'वीर तुम बढ़े चलो' के विजय-भाव का चित्रण बहुत सुंदरता के साथ हुआ है—

किशतियाँ बढ़ती ही रहती हैं किनारे की तरफ़,
डर के तूफ़ान के दरिया नहीं छोड़ा जाता।
हादिसे रोज़ ही होते हैं, यह सच है लेकिन,
हादिसों के लिए रस्ता नहीं छोड़ा जाता।

हिंदी गज़लों में अनेक जगह 'प्रेम' का व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत हुआ है। इसी व्यापक सोच के आधार पर डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की आशा करते हैं—

चाहतेँ, प्यार, सदाचार न जाने देना,
मन से अपने ये सरोकार न जाने देना।

स्वार्थ ही स्वार्थ है दुनिया में यह माना लेकिन,
दिल से तुम अपने मगर प्यार न जाने देना।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिंदी-गज़ल में आशावाद के स्वरो को अनेक स्थानों पर सटीक अभिव्यक्ति मिली है। परिमाण के रूप में भले ही यह आशावाद बहुत अधिक नहीं है, किंतु जहाँ-जहाँ आशावादिता को स्थान मिला है, वहाँ-वहाँ यह पूरी परिपक्वता के साथ घनघोर निराशा में भी आशा की किरण जगाने और नकारात्मकता के स्थान पर सकारात्मक दृष्टिकोण को मजबूत करने में अत्यंत सफल रही है। यद्यपि हिंदी-गज़लकारों ने अपने समय की विसंगतियों, विडंबनाओं, शोषण, अत्याचार, मूल्यहीनता, पाखंड, कुंठा, संत्रास और भय आदि सभी युग-प्रसंगों का समावेश किया है, तथापि इनमें अनेक ऐसे गज़लकार हैं, जो अपनी गज़लों के माध्यम से सभी विसंगतियों के खिलाफ़ मानव के अंदर छिपी शक्ति को जगाते हैं और सतत् संघर्ष करने को प्रेरित करते हैं। ये गज़लें व्यक्ति को हौसला देती हैं, निराशा के क्षणों में आशा का संचार करती हैं, गहन अंधकार में एक नई रोशनी बनकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं और प्रगति के पथ पर गतिमान रहने की

शक्ति एवं ऊर्जा देती हैं। इन गज़लों में जहाँ मानवता का संदेश प्रवाहित होने लगता है, वहीं पर समाज, राष्ट्र एवं इस संसार को रोशनी दिखाने का प्रयास भी दिखाई देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

1. रोशनी बनकर जिओ, डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
2. हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ गज़लें, सं० डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
3. मानसिक संतुलन, पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
4. हिन्दी गज़ल यात्रा-2, सं० डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
5. मौसम बदल गया कितना, डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
6. सफ़र साठ साल का, सं० डॉ० अजय जनमेजय

